International Journal of Applied Research 2017; 3(1): 1004-1005

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(1): 1004-1005
www.allresearchjournal.com
Received: 22-11-2016
Accepted: 24-12-2016

डॉ. युगलकिशोर शर्मा
प्राध्यापक, चित्रकला विभाग, से.म. बि.रा. महाविद्यालय, नाथद्वारा
पता– 29, समर्पित कोम्पलेक्स, पुलां, उदयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ. युगलकिशोर शर्मा
प्राध्यापक, चित्रकला विभाग, से.म. बि.रा. महाविद्यालय, नाथद्वारा
पता– 29, समर्पित कोम्पलेक्स, पुलां, उदयपुर, राजस्थान, भारत

नाथद्वारा के चित्रकार

डॉ. युगलकिशोर शर्मा

सारांश–
नाथद्वारा के चित्रकार अत्यन्त धार्मिक प्रवृति के रहे है। श्रीनाथजी के प्रति अनन्य प्रेम, श्रृद्धा व सर्वस्व समर्पण का भाव रख कर चित्रों की रचना सेवा–भाव से करते है जिससे नाथद्वारा के प्राचीन चित्रों में अत्यन्त भावपूर्ण अंकन दृष्टिगत होता है।

मुख्य शब्द– चितेरा (Male Painter), चितेरन (Female Painter), जागा (Genologist)

प्रस्तावना:
ब्रज के गोवर्धन से श्रीनाथजी के साथ आये सेवकों के चित्रकार भी थे। इन्होंने ब्रज की भित्ति–चित्रण परम्परानुसार ही नाथद्वारा मंदिर में सर्वप्रथम भित्ति–चित्रण किया। बाद में नाथद्वारा में चित्रों की बढ़ती मांग के कारण उदयपुर से भी कई चित्रकार नाथद्वारा बसे जिसमे मुख्य रूप से आदिगौड़ एवं जांगीड़ ब्राहमण थे। इन चित्रकारों का नाथद्वारा चित्रकला के विकास में प्रमुख योगदान रहा जिससे इनका उल्लेख महत्वपूर्ण हो जाता है।
'विष्णुधर्मोत्तरपुराण'[1] में चित्रकार के कार्य को अत्यधिक गंभीर एवं पवित्र माना है। चित्रकार को शुभ–नक्षत्र में पूजन–अर्चन, ईष्टदेव का ध्यान एवं गुरूजन को प्रणाम कर पूर्व दिशा में बैठ कर चित्र–रचना करने का उल्लेख मिलता है। चित्रकार एक योगी के समान था। वह अपनी कला–साधना मे इतना तल्लीन हो जाता कि उसका एक प्रकार से ईश्वर के तादात्म्य बन जाता। वह अपनी कला का सृजन व्यक्तिगत प्रशंसा के लिए नही करता वरन स्वयं को उसमे मिटा देना चाहता था।
लगभग यही प्रवृति भारत के राजस्थान में स्थित धार्मिक नगर नाथद्वारा के चित्रकारों की रही। वह श्रीनाथजी का परम भक्त होकर उनके प्रति अनन्य प्रेम, श्रद्धा व सर्वस्व समर्पण का भाव रखते हुए चित्रों की रचना सेवा–भाव से करता था जो एक प्रकार से भक्ति करने का रूप था। यही कारण है कि नाथद्वारा के प्राचीन चित्रों के अत्यन्त भावपूर्ण अंकन दिखाई देता है। यहां के चित्रकारों के लिए चित्रण करना केवल व्यवसाय ही नहीं अपितु जीवन जीने का एक तरीका भी था[2] जो अब बहुत कम देखने को मिलता है।
अष्टछापीय कवियों मे चतुर्भुजदास[3] एवं छीतस्वामी[4] ने अपने पदों में पुरूष–चित्रकार के लिए 'चितेरा' तथा महिला चित्रकार के लिए 'चितेरन' शब्द का प्रयोग किया है जो नाथद्वारा में प्रचलित है– सन 1671 ई. ब्रज के गोवर्धन से गोस्वामी तिलकायत दामोदर जी 'दाऊजी' (1654–1703 ई.) श्रीनाथजी के साथ अपने सेवकों मे चित्रकार को भी नाथद्वारा लाये ताकि वे सम्प्रदाय की परम्परानुसार चित्रण कर सके।[5] इसकी पुष्टि वंशावलीधारक बाबूलाल 'जागा' की प्राचीन पोथी से भी होती है जिसमे उल्लेख है कि आदि गौड़ ब्राहमण में कोकासिया गौत्र का परिवार गोवर्धन के आन्योर गांव से श्रीनाथजी के साथ निकला। साक्षात्कार के अनुसार नारोलिया, चिलिया व जटोईया गौत्र के परिवार भी ब्रज से आये। इन चित्रकारों ने 1672 ई. में नाथद्वारा में श्रीनाथजी मंदिर निर्माण के साथ ही भित्ति चित्रण किया। प्रसिद्ध कला समीक्षक रामकृष्णदास के अनुसार ये चित्रकार उसी परम्परा के है जो प्रारंभ से ही वल्लभ संप्रदाय से संबंधित थे और जिनका मुख्य केन्द्र नाथद्वारा से पूर्व ब्रज था। इसका समर्थन प्रभुदयाल मीतल भी करते है।[6]
तत्पश्चात मंदिर का वैभव बढने के साथ ही वैष्णव दर्शनार्थियों के आवागमन एवं उनके घरों के चित्र सेवा हेतु श्रीनाथजी के चित्रों की मांग बढ़ी। इस कारण नाथद्वारा के निकट उदयपुर कई चित्रकार नाथद्वारा आकर बसे। इनमे आदिगौड ब्राहमण एवं जांगीड़ ब्राहमण प्रमुख थे। धीरे–धीरे नाथद्वारा में चित्रकारों की संख्या बढ़ती रही और आज लगभग एक हजार चित्रकार यहां चित्रण कार्य करते है एक छोटे से नगर में इतने चित्रकारों की संख्या शायद ही कही हो।
19वीं सदी के पूर्व तक किसी भी चित्रकार ने अपना नाम चित्रों में नहीं लिखा है। 19वीं सदी के प्रारंभ में अर्थात 1811 ई. की एक पाण्डुलिपि 'सुखनावली'[7] में 'नाथू जी पुत्र अलावमस' नाम अंकित

है। तत्पश्चात 1846 ई. की 'अन्नकुट की पिछवाई' (Cloth Painting) मे भी 'नाथू' नाम मिलता है। तदन्तर सर्वप्रथम कोकासिया गौत्र के चित्रकार किशनदास गौड (1832–1876 ई.) का तथा इन्ही के समकालीन रहे एकलिंगदास गौड (1830–?) का पोट्रेट मिलता है।

1835 ई. में चित्रकार भगवान जी गौड़ का बनाया श्रीनाथ जी का महत्वपूर्ण चित्र जो घस्यार स्थित श्रीनाथ जी के प्राचीन मंदिर में है जो सेवा रूप में है। इन्हीं के समकालीन चित्रकार चतुर्भुज जी जांगीड (1830/40–?) रहे जिनके भित्ति चित्र सनवाड़ के 'बांकिया जी का देवरा' में मिलते हे जहां इन्होने स्वयं का चित्र भी बनाया है। इनके साथ रामचन्द्र जी जांगीड एवं एकलिंगदास जांगीड ने 1861 ई. मे नाथद्वारा के मोती–महल मे भित्ति चित्रण किया।

तत्पश्चात, सुखदेव किशनदास गौड (1852–1919 ई.) प्रसिद्ध चित्रकार हुए जो श्रीनाथ जी मंदिर मे मुखिया चित्रकार थे। गो. ति. गोवर्धनलाल जी महाराज ने इन्हें श्रीमदभागवत को ग्रंथ रूप मे चित्रित करने को कहा। इनके निर्देशन में 1881 से 1916 ई. के मध्य लगभग 35 वर्षो में 960 चित्रों की रचना की गई[8] जो तत्कालीन नाथद्वारा चित्रशैली की महत्वपूर्ण रचना थी। इनके एवं इनके छोटे भाई हरदेव जी द्वारा चित्रित संध्या आरती की पिछवाई' नवनीतप्रिया जी मंदिर मे संग्रहित है। लगभग इन्ही के समकालीन चित्रकार घासीराम जी शर्मा (1869–1931 ई) भी प्रसिद्ध चित्रकार हुए। इनके समय 1901 ई. मे जब भारत के प्रख्यात चित्रकार राजारवि वर्मा उदयपुर आये तब उनके चित्रण कार्य से ये बहुत प्रभावित हुए और उनकी शैली के अनुरूप यथार्थवादी चित्रण कर नाथद्वारा कला को चरम रूप दिया इन पर उदयपुर के चित्रकार मास्टर कुन्दनलाल (1860–1930 ई.) का भी बहुत प्रभाव पडा जिससे इन्होने नाथद्वारा चित्रकला को फोटोग्राफिक चित्रण की ओर उन्मुख किया। सुखदेव जी गौड एवं घासीराम जी शर्मा (जांगीड) की कला का प्रभाव नाथद्वारा के कई चित्रकारों पर बाद तक देखा जा सकता है, जिनमे हीरालालजी जांगीड, नारायणलालजी जांगीड, रघुनाथजी गौड, द्वारकानाथजी गौड, चम्पालालजी गौड, भीमराजजी गौड, नरोतमजी जांगीड, जोधराजजी गौड, कन्हैयालालजी गौड, द्वारकालालजी जांगीड, घनश्यामजी जांगीड, बी.जी. शर्मा, इन्द्रजी शर्मा, रेवाशकरजी शर्मा, चतुर्भुजजी शर्मा, जमनादासजी शर्मा प्रमुख है। समकालीन कला के संदर्भ में वर्तमान में चरण शर्मा, ललित शर्मा, हेमन्त शर्मा, युगलकिशोर शर्मा, यामिनी शर्मा के नाम उल्लेखनीय है।

निष्कर्ष:

नाथद्वारा के चित्रकारों ने विभिन्न शैलियों के प्रमुख तत्वों को ग्रहण कर अपनी कला को उन्नत बनाया। समयाकाल अनुसार आये प्रभावों को ग्रहण किया और अपनी निज शैली विकसित किया। इनसे कई चित्रकार अत्यन्त प्रतिभाशाली हुए जिन्होंने लघु–चित्रों, भित्ति–चित्रों एवं विशाल पिछवाईयों का निर्माण किया। सुखदेव किशनदास आदिगौड़ एवं घासीराम शर्मा की चित्रण–विधि का अनुसरण आज तक किया जा रहा है।

संदर्भ:

1. Priyabala Shah. Vishnudharmottar-Purm (Thitd khand), (Baroda: Oriental Institute, 1961;II:11-13.
2. Joshi OP. Printed Folklore and folklore painters of India (Dehli: concept Publishing Company, 1976
3. गो. ब्रजभूषण लाल शर्मा (संपा.) चतुर्भुरदास (काकरोलीः विद्या विभाग प्रका. 1957, पृष्ठ 129–161
4. गो. ब्रजभूषण लाल शर्मा (संपा.) छीतस्वामी (कांकरोलीः विद्या विभाग प्रका. 1955, पृ.47
5. Vandana Prapanna & Manisha Nene, Krishna (Mumbai: Chhatrapati Shivaji Maharaj Vastu Sangrtahalaya, 2009) P. 35
6. प्रभुदयाल मीतल, ब्रज की कलाओं का इतिहास, (मथुराः साहित्य संस्थान, प्रका. 1975, पृष्ठ 418
7. हरिशचन्द्र सोनी, ''नाथद्वारा के पिछवाई चित्रशैली में लोकचित्रण तत्वों का प्रभाव'', नाथद्वारा की लोक कला, (उदयपुरः तूलिका कलाकार परिषद, 1980, पृ. 2
8. प्रभुदास वैरागी, श्रीनाथद्वारा का सांस्कृतिक इतिहास (अलीगढ़ः भारत प्रकाशन मंदिर, 1977, पृ. 168